अपने धर्मविज्ञान का निर्माण करना

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय एक

धर्मविज्ञान क्या है?

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 3

नोट्स 4

1. परिचय (0:24) 4

2. परिभाषाएँ (1:34) 4

A. विशेष परिभाषाएँ (1:55) 4
1. थौमस ऐक्विनास (3:06) 4
2. चार्ल्स हौज (6:01) 5
3. विलियम ऐम्स (8:48) 6
4. जॉन फ्रेम (10:25) 7

B. प्रवृतियाँ (झुकाव) (11:11) 7
1. शैक्षिक दिशा निर्धारण (11:33) 7
2. जीवन दिशा-निर्धारण (13:8) 8

C. मूल्यांकन (15:11) 8
1. शैक्षिक दिशा-निर्धारण (15:33) 8
2. जीवन दिशा निर्धारण (18:57) 9

3. तीन उद्देश्य (22:52) 10

A. प्राथमिक उद्देश्य (23:27) 10
1. उचित सोच (रूढ़िवादी सोच) (24:56) 10
2. उचित व्यवहार (28:23) 10
3. उचित भावनाएं (31:59) 11

B. आपसी निर्भरता (35:31) 12
1. उचित सोच (36:06) 13
2. उचित व्यवहार (37:45) 13
3. उचित भावनाएं (39:59) 13

C. प्राथमिकताएं (41:50) 14

4. विषय (46:25) 15

A. कई विकल्प (47:08) 15

B. चुनाव (49:48) 16

5. उपसंहार (54:20) 17

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 18

उपयोग के प्रश्न 22

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - **पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें** — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

नोट्स

1. परिचय (0:24)

2. परिभाषाएँ (1:34)

A. विशेष परिभाषाएँ (1:55)

1. थौमस ऐक्विनास (3:06)

रोमन कैथोलिक धर्मविज्ञानी : धर्मविज्ञान की पारंपरिक परिभाषा को "पवित्र सिद्धांत" के रूप में प्रस्तुत करता है।

"एक एकीकृत विज्ञान जिसमें परमेश्वर के सभी पहलुओं को पढ़ा जाता है या तो इसलिये क्योंकि वे स्वयं परमेश्वर हैं या क्योंकि वे परमेश्वर की ओर इशारा करते हैं।" (सुम्मा थियोलौजिका1.1.7)

विज्ञान : एक बौद्धिक या विद्वानीय कार्य।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

धर्मविज्ञान के दो स्तर हैं :

- *वास्तविक धर्मविज्ञान* : स्वयं परमेश्वर से संबंधित विषय

- *धर्मविज्ञान* : कोई भी विषय जो परमेश्वर से संबंधित हो या उसके विषय में हो

2. चार्ल्स हौज (6:01)

धर्मविज्ञान (ईश्वरीय-ज्ञान) "ईश्वरीय प्रकाशन के तथ्यों का विज्ञान है, उस हद तक, जहाँ कि ये तथ्य परमेश्वर के स्वभाव से और उसके साथ हमारे संबंधों से सरोकार रखते हैं।" (सिस्टेमेटिक थियोलोजी से उद्धृत)

“ईश्वरीय प्रकाशन के तथ्य” : परमेश्वर के प्रकाशन के महत्व पर बल, विशेषकर धर्मविज्ञान के मुख्य स्त्रोत के रूप में बाइबल पर।

विज्ञान : एक शैक्षिक अनुशासन

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

"बाइबल में सत्य पाये जाते हैं जिन्हें धर्म-विज्ञानी को उनके आपसी संबंधों में जमा करना, पुष्टि करना, व्यवस्थित करना, और दिखाना होता है।"
(*सिस्टेमेटिक थियोलोजी* से)

धर्मविज्ञान में दो मुख्य विषय :

- *वास्तविक धर्मविज्ञान* : परमेश्वर की प्रकृति

- *धर्मविज्ञान* : उसके साथ हमारा संबंध

3. विलियम ऐम्स (8:48)

धर्मविज्ञान की अंतर-आत्मा है "परमेश्वर को समर्पित जीवन जीने की शिक्षा या सिद्धांत।" मैरो औफ थियोलौजी

- "सिद्धांत या शिक्षा" : विचारों या शिक्षाओं का बौद्धिक प्रयास, परन्तु अन्य शैक्षिक पाठ्यक्रमों से अधिक जुड़ाव के महत्व को नकारना।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- "परमेश्वर के प्रति जीना" : किस प्रकार एक व्यक्ति को परमेश्वर के प्रति और परमेश्वर के लिए जीना है

4. जॉन फ्रेम (10:25)

"धर्मविज्ञान मनुष्यों द्वारा परमेश्वर के वचन को जीवन के सभी क्षेत्रों पर लागू करना। (*द डाक्ट्रिन औफ द नौलेज औफ गौड* अध्याय 3 से)

धर्मविज्ञान लागू करने की बात है। यह जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं को लागू करना है।

B. प्रवृतियाँ (झुकाव) (11:11)

1. शैक्षिक दिशा निर्धारण (11:33)

ऐक्विनास और हौज अधिकांश मसीहियों का प्रतिनिधित्व करते हैं :

- *थियोस* : परमेश्वर
- *लोगोस* : का विज्ञान, या सिद्धांत या अध्ययन

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग को प्रायः औपचारिक धर्मविज्ञान के लिए आवश्यक नहीं परन्तु दूसरा कदम माना जाता है, कभी-कभी इसे "व्यावहारिक धर्मविज्ञान" कहा जाता है।

2. जीवन दिशा-निर्धारण (13:8)

ऐम्स और फ्रेम अल्पमत के दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं।

धर्मविज्ञान गहरे और आवश्यक रूप से मसीह के लिए जीने से संबंधित है।

C. मूल्यांकन (15:11)

1. शैक्षिक दिशा-निर्धारण (15:33)

मजबूती : हमारी विवेकी योग्यताओं का प्रयोग करता है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

खतरा : धर्मविज्ञानियों के जीवनों पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है।

2. जीवन दिशा निर्धारण (18:57)

मजबूती : कुछ महत्वपूर्ण बाइबलीय मूल्यों को देखने में हमें उत्साहित करता है।

अच्छा धर्मविज्ञान सही जीवन की ओर अगुवाई करेगा।

खतरा : बौद्धिकता विरोधी; धर्मविज्ञानी शिक्षा के गहन अध्ययन का विरोध।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. तीन उद्देश्य (22:52)

A. प्राथमिक उद्देश्य (23:27)

1. उचित सोच (रूढ़िवादी सोच) (24:56)

सही या सीधी सोच

उचित सोच का लक्ष्य है सही या सच्ची धर्मशिक्षाओं तक पहुंचना।

चुनौती : कलीसिया के बाहर और भीतर धर्मविज्ञानीय भिन्नता।

2. उचित व्यवहार (28:23)

सही व्यवहार या क्रिया

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

चुनौतियाँ :

- कलीसिया के बाहर के लोग कहते हैं कि ऐसे कोई नैतिक मूल्य नहों हैं जो बिलकुल सही हों, अर्थात् कोई भी स्वभाव विशेष रूप से अच्छे या बुरे नहीं होते।

- मसीही अतीत में उचित व्यवहार में असफल हुए हैं।

परमेश्वर हमारे व्यवहार की परवाह करता है।

दीनता और प्रेम हर समय हमारे कार्यों में प्रदर्शित होने चाहिए।

3. उचित भावनाएं (31:59)

उचित या सही भावनाएं या संवेदनाएं

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

हमारे आनंद, हमारी निराशाएं, हमारी लालसाएं, हमारा क्रोध, हमारा उत्साह और अन्य कई संवेदनाएं इन सबको परमेश्वर की इच्छा के सदृश्य लाना आवश्यक है।

धर्मविज्ञान के संवेदनात्मक पहलुओं की उपेक्षा के कारण :

- शैक्षिक धर्मविज्ञानी प्रायः संवेदनाओं को व्यक्त करने और खोजने में मनोवैज्ञानिक रूप में अयोग्य होते हैं।

- अनेक सुसमचारिक लोग मानते हैं कि संवेदनाएँ अनैतिक होती हैं; कि वे नैतिक रूप से निष्पक्ष होती हैं।

B. आपसी निर्भरता (35:31)

हम किसी एक क्षेत्र में मजबूत नहीं हो सकते जब तक हम अन्य दो क्षेत्रों में मजबूत नहीं होते।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. उचित सोच (36:06)

जिसे हम सही या उचित समझते हैं वह हमारे व्यवहार और संवेदनाओं की या तो पुष्टि करेगा या उन्हें चुनौती देगा।

2. उचित व्यवहार (37:45)

हमारा आचरण या हमारे कार्य उसकी या तो पुष्टि कर सकते हैं या उन्हें चुनौती दे सकते हैं जिन्हें हम सही समझते हैं।

क्रियाकलाप भी धर्मविज्ञान के भावनात्मक पहलुओं को प्रभावित करते हैं।

3. उचित भावनाएं (39:59)

जो हम मानते और करते हैं उन्हें हमारी भावनाएं प्रभावित करती हैं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. प्राथमिकताएं (41:50)

हमारे विश्वास और हमारे कार्य और हमारी भावनाएँ बहुत सारे आपसी संबंधों का एक जाल बनाते हैं

- बहुरेखीय
- पारस्परिक
- हम हमेशा एक प्राथमिकता को नहीं दर्शा सकते

हमें धर्मविज्ञान के उन लक्ष्यों को प्राथमिकता और महत्व देने के लिए बुद्धि को विकसित करना चाहिए जो किसी परिस्थिति में सबसे अधिक आवश्यक होते हैं।

क्योंकि जीवन की नैय्या हर समय खिसकती रहती है, संतुलन को बनाना कुछ और नहीं क्षण भर की एक घटना है।

प्रत्येक धर्मविज्ञानीय कार्य के लिए कोई एकसमान मार्ग नहीं हो सकता :

- क्या आवश्यक है?
- इस समय सबसे अधिक क्या आवश्यक है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

तात्कालिक समय के लिए उचित दिशा-निर्धारण को स्थापित करें, और अपने सारे मन से धर्मविज्ञान के लक्ष्यों का अनुसरण करें।

4. विषय (46:25)

A. कई विकल्प (47:08)

धर्मविज्ञान में विषयों की एक लम्बी सूची शामिल होती है :

- व्यावहारिक विषय :
    - मिशन्स
    - सुसमाचार प्रचार
    - पक्षमण्डन शास्त्र (विश्वास का बचाव करना)
    - आराधना
    - दया की सेवाएँ
    - मसीही परामर्श
    - प्रचार-शास्त्र
- सैद्धांतिक विषय :
    - मुक्ति का ज्ञान (उद्धार का सिद्धांत)
    - कलीसियाई विज्ञान (कलीसिया या चर्च के सिद्धांत)
    - मानवविज्ञान (मानवता का सिद्धांत)
    - पवित्र आत्मा शास्त्र (पवित्र आत्मा के सिद्धांत)
    - ख्रीस्त-शास्त्र (मसीह के सिद्धांत)
    - उचित ईश्वरीय-ज्ञान (परमेश्वर के सिद्धांत)
    - युगांत विज्ञान (युग के अंत के सिद्धांत)
    - बाइबल पर आधारित ईश्वरीय-ज्ञान (बाइबल में वर्णित छुटकारे के इतिहास का ईश्वरीय-ज्ञान)
    - योजनाबद्ध ईश्वरीय-ज्ञान (बाइबल की शिक्षा का तर्कसंगत वर्गीकरण)

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- ऐतिहासिक ईश्वरीय-ज्ञान (कलीसिया के इतिहास में सिद्धांतों के विकास की जाँच)
- और भाष्य विज्ञान (या व्याख्या)

उपलब्ध दिशा-निर्धारण :

- उचित सोच
- उचित व्यवहार
- उचित भावनाएं

B. चुनाव (49:48)

विकल्पों की लंबी सूची चुनाव की आवश्यकता की ओर अगुवाई करती है।

पासवानी धर्मविज्ञानीय विषय : विश्वासों, क्रियाओं और भावनाओं का समूह, जो पासवानों और कलीसिया अगुवों के लिए और अधिक प्रत्यक्ष रूप से लाभकारी है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

एक आदर्श सैमनरी पाठ्यक्रम :

- बाइबल पर आधारित भाग
    - पुराना नियम
    - नया नियम
- ऐतिहासिक और सैद्धांतिक भाग
    - कलीसियाई इतिहास
    - योजनाबद्ध धर्मविज्ञान
- व्यावहारिक
    - व्यक्तिगत आत्मिक विकास
    - व्यावहारिक मसीही सेवा के कौशल

5. उपसंहार (54:20)

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. एक्विनास, होज, ऐम्स और फ्रेम द्वारा प्रदान की गई “धर्मविज्ञान” (ईश्वरीय-ज्ञान) की चार परिभाषाओं का संक्षिप्त में वर्णन करो।

2. उन दो प्रवृतियों या दृष्टिकोणों का वर्णन करो जो अधिकांश लोग धर्मविज्ञान (ईश्वरीय-ज्ञान) के अध्ययन के संबंध में रखते हैं?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. शैक्षिक दिशा-निर्धारण और जीवन दिशा-निर्धारण की तुलनात्मक मजबूतियों और कमजोरियों में अंतर स्पष्ट करो।

4. धर्मविज्ञान (ईश्वरीय-ज्ञान) के तीन मुख्य उद्देश्यों का वर्णन करो।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. किन रूपों में धर्मविज्ञान (ईश्वरीय-ज्ञान) के तीन प्राथमिक उद्देश्य एक दूसरे पर निर्भर हैं?

6. किस प्रकार एक व्यक्ति को धर्मविज्ञान (ईश्वरीय-ज्ञान) के तीन उद्देश्यों को प्राथमिकता देनी चाहिए?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. विषयों और लक्ष्यों के आधार पर योजनाबद्ध धर्मविज्ञानियों के पास उपलब्ध विकल्पों का वर्णन कीजिए।

8. एक आदर्श सैमनरी पाठ्यक्रम में कैसे चुनाव प्रस्तुत किए जाते हैं और ये चुनाव महत्वपूर्ण क्यों होते हों?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. आप एक ऐसे व्यक्ति के समक्ष “धर्मविज्ञान” (ईश्वरीय-ज्ञान) को कैसे स्पष्ट करेंगे जो इस विषय से अनभिज्ञ हो?

2. आपके अनुसार धर्मविज्ञान (ईश्वरीय-ज्ञान) के प्रति कौनसा दृष्टिकोण अधिक महत्वपूर्ण है? क्यों?

3. स्पष्ट करें कि आप जीवन दिशा-निर्धारण के साथ सफलतापूर्वक धर्मविज्ञान (ईश्वरीय-ज्ञान) को कैसे क्रियान्वित कर सकते हैं?

4. इसका अर्थ क्या है, “हमारे विश्वास और हमारे कार्य और हमारी भावनाएँ बहुत सारे आपसी संबंधों का एक जाल बनाते हैं”? जब आप धर्मविज्ञान (ईश्वरीय-ज्ञान) का अध्ययन आरंभ करते हैं तो इस बात को समझना महत्वपूर्ण क्यों है?

5. डॉ. प्रैट ने कहा, "क्योंकि जीवन की नैय्या हर समय खिसकती रहती है, संतुलन को बनाना कुछ और नहीं क्षण भर की एक घटना है।" इसका क्या अर्थ है, और धर्मविज्ञान (ईश्वरीय-ज्ञान) के अध्ययन के लिए इसके क्या आशय हो सकते हैं?

6. जब हम धर्मविज्ञान (ईश्वरीय-ज्ञान) का अध्ययन करते हैं, तो बौद्धिकतावाद के खतरे से कैसे बच सकते हैं?

7. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है? क्यों?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org